NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 30-09-2024

विषय सूची

लोथल और उसके डॉकयार्ड के नए प्रमाण

भारत में आयुष प्रणाली

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने AVGC के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र को मंजूरी दी

प्रदूषण को लेकर उच्चतम न्यायलय द्वारा दिल्ली वायु गुणवत्ता पैनल को फटकार

निष्क्रिय इच्छामृत्यु पर ड्राफ्ट दिशानिर्देश जारी

संक्षिप्त समाचार

कच्छ का रण

स्वच्छ भारत मिशन शहरी 2.0

मारबर्ग वायरल रोग

IBSA

PM सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना

सरकार ने गैर-बासमती सफेद चावल के निर्यात पर प्रतिबंध हटाया

डार्क मैटर

थर्मोबेरिक हथियार

परिवेश 2.0 पोर्टल

केरल की RRR चौंपियन' पहल

लोथल और उसके डॉकयार्ड के नए प्रमाण

समाचार में

- IIT गांधीनगर के शोधकर्ताओं ने भारत के एक महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल लोथल में एक डॉक के अस्तित्व का समर्थन करने वाले नए साक्ष्य खोजे हैं।

लोथल के बारे में

- **स्थान और निष्कर्ष:** अहमदाबाद से 80 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित लोथल की खोज पुरातत्ववेत्ता एस आर राव के नेतृत्व में आधिकारिक उत्खनन से बहुत पहले स्थानीय ग्रामीणों द्वारा की गई थी।
  - उन्होंने इस विशाल संरचना की पहचान समुद्री व्यापार के लिए एक डॉक के रूप में की, जो 18-20 मीटर लंबे जहाजों को बहाकर ले जाने में सक्षम थी।
  - लोथल को मुहरों, व्यापारिक वस्तुओं और पत्थर के लंगर की उपस्थिति के कारण समुद्री वाणिज्य का केंद्र माना जाता था।
- **डॉकयार्ड विवाद:** लोथल की खोज के बाद से, पुरातत्वविदों ने इस बात पर परिचर्चा की है कि क्या 215 मीटर लंबी और 37 मीटर चौड़ी संरचना एक डॉकयार्ड थी।
  - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने इस सिद्धांत का समर्थन किया है, लेकिन कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि यह एक जलाशय हो सकता है।
- **नए साक्ष्य:** IIT-गांधीनगर के अध्ययन ने लोथल के पास बहने वाली पुरानी साबरमती नदी के चैनलों को प्रकट करने के लिए उपग्रह इमेजरी का उपयोग किया, जिससे पता चलता है कि नावें धोलावीरा जैसे अन्य हड़प्पा स्थलों तक जा सकती थीं।
  - लोथल मेसोपोटामिया तक फैले एक व्यापार नेटवर्क का भाग था, जो कृषि और समुद्री उत्पादों का निर्यात करता था, और रत्न तथा धातु जैसे कच्चे माल का आयात करता था।
- **महत्व:** लोथल के नाम का अर्थ गुजराती में "मृतकों का टीला" है। यह शहर 3700 ईसा पूर्व के आसपास एक संपन्न व्यापारिक बंदरगाह था, और ASI द्वारा 1955 तथा 1960 के बीच की गई खुदाई से व्यापार के लिए महत्वपूर्ण एक प्राचीन नदी प्रणाली से इसका संबंध पता चला।
  - लोथल सिंधु घाटी सभ्यता का एक महत्वपूर्ण शहर था, जो 4,500 वर्ष पुराना है।
  - उत्खनन से विश्व की सबसे पुरानी ज्ञात कृत्रिम डॉक, एक एक्रोपोलिस, निचला शहर, मनका कारखाना, गोदाम, जल निकासी प्रणाली और नहरों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जो एक व्यापारिक शहर के रूप में इसके महत्व को प्रकट करती हैं।
  - कलाकृतियों से पता चलता है कि लोथल मेसोपोटामिया, मिस्र और फारस जैसी प्राचीन सभ्यताओं के साथ व्यापार में शामिल था।
  - लोथल ने आधुनिक भारतीय पुरातत्व में सबसे अधिक पुरावशेष प्रदान किए हैं।
- **लोथल का पतन:** पानी, जिसने लोथल को समृद्धि दी, उसके विनाश का भी कारण बना। इस स्थल का कई बार पुनर्निर्माण किया गया, और तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत में अपने चरम पर, इसमें 15,000 लोग रह सकते थे।
- **यूनेस्को नामांकन:** लोथल को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल बनने के लिए नामांकित किया गया है।
- **धोलावीरा से तुलना:** लोथल और धोलावीरा (गुजरात में) भारत में दो प्रमुख हड़प्पा स्थल हैं। दोनों में समानताएं हैं, जैसे बड़े जलाशयों की उपस्थिति, लेकिन आकार और शहरी लेआउट में अंतर है।

सरकारी पहल:

- **राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC):** भारत सरकार लोथल में एक राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर का निर्माण कर रही है, ताकि भारत के समुद्री इतिहास और हड़प्पा काल से जुड़े वैश्विक व्यापार संबंधों को प्रकट किया जा सके। यह समुद्री केंद्र के रूप में लोथल के महत्व को प्रदर्शित करेगा।

Source :IE

भारत में आयुष(AYUSH) प्रणाली

सन्दर्भ

- केंद्रीय आयुष मंत्री ने 9वें आयुर्वेद दिवस के लिए थीम "वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद नवाचार" की घोषणा की और आयुष के महत्व पर बल दिया।

आयुष (आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी)

- आयुष विभाग का मुख्य उद्देश्य लोगों को आयुष के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है।
- आयुष विभाग में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध तथा होम्योपैथी स्वास्थ्य सेवा एवं उपचार की प्रणालियाँ शामिल हैं।
- सरकार पारंपरिक चिकित्सा को आधुनिक स्वास्थ्य सेवा के साथ एकीकृत करने के उद्देश्य से विभिन्न पहलों के माध्यम से इन प्रणालियों को बढ़ावा देती है।

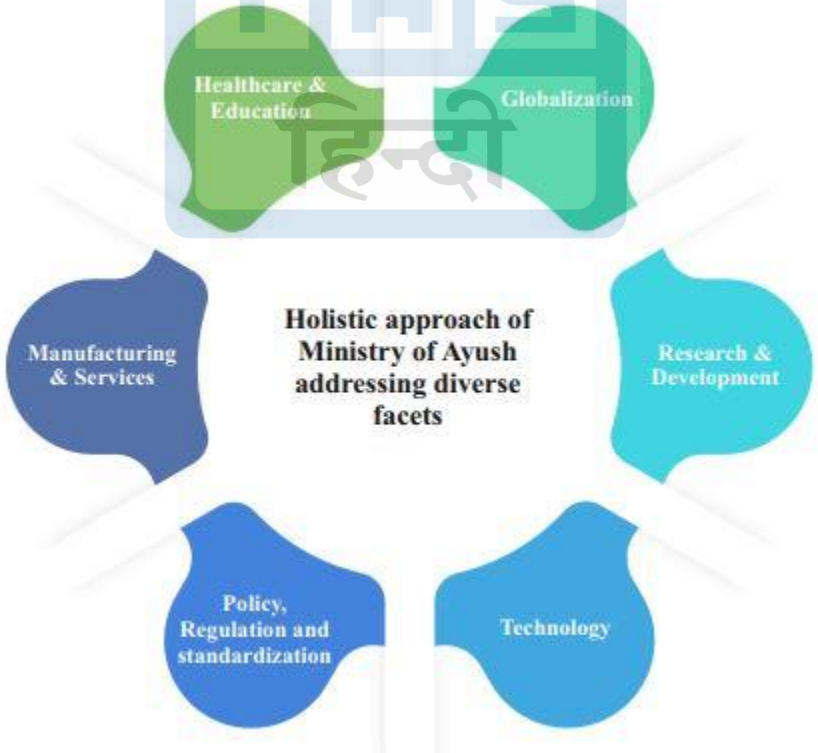

आयुष प्रणाली की मुख्य विशेषताएं:

- **आयुर्वेद:** जड़ी-बूटियों, आहार और जीवनशैली में बदलाव का उपयोग करके समग्र उपचार पर ध्यान केंद्रित करता है। यह शरीर, मन और आत्मा में संतुलन पर बल देता है।

- **योग और प्राकृतिक चिकित्सा:** योग आसन, श्वास अभ्यास और ध्यान के माध्यम से शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। प्राकृतिक चिकित्सा प्राकृतिक उपचार और जीवनशैली में बदलाव पर बल देती है।
- **यूनानी:** ग्रीक चिकित्सा से उत्पन्न, यह हर्बल उपचार का उपयोग करता है और शरीर के तत्वों के बीच संतुलन पर बल देता है।
- **सिद्ध:** दक्षिण भारत की एक पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली, जो कीमिया और हर्बल चिकित्सा पर केंद्रित है।
- **होम्योपैथी:** "जैसे इलाज वैसे ही" के सिद्धांत पर आधारित, यह विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए अत्यधिक पतला पदार्थों का उपयोग करता है।

आयुष क्षेत्र का विकास

- भारत का आयुष बाजार आकार 43.4 बिलियन अमरीकी डॉलर (₹1931 बिलियन - विनिर्माण, ₹1667 बिलियन- सेवाएँ) है।
  - **भारत का कुल आयुष निर्यात:** US$1.54 बिलियन (₹114 बिलियन)।
  - आयुष और हर्बल उत्पाद/दवाएँ 150 से अधिक देशों को निर्यात की जाती हैं।
- वर्तमान में, आयुर्वेद को 30 से अधिक देशों में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- आयुष निर्यात संवर्धन परिषद (AYUSHEXCIL): इसे आयुष मंत्रालय द्वारा वैश्विक स्तर पर आयुष उत्पादों तथा सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है और वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समर्थित है।
- **आयुष वीज़ा:** गृह मंत्रालय ने भारत में चिकित्सीय देखभाल, स्वास्थ्य और योग जैसे चिकित्सा उपचार चाहने वाले विदेशी नागरिकों के लिए एक नई वीज़ा श्रेणी, "आयुष वीज़ा" को शामिल किया है।
- मंत्रालय की IC योजना के तहत अब तक 08 देशों अर्थात् केन्या, अमेरिका, रूस, लातविया, कनाडा, ओमान, ताजिकिस्तान और श्रीलंका में 50 से अधिक उत्पाद (यूनानी और आयुर्वेद) पंजीकृत किए गए हैं।
- **वैश्विक मान्यता:** आयुष मंत्रालय और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत के जामनगर में विश्व का पहला और एकमात्र वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र (WHO GTMC) स्थापित किया है।
- संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2014 में सर्वसम्मति से प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव अपनाया।

सरकारी पहल

- **आयुष मंत्रालय:** 2014 में स्थापित, यह मंत्रालय पारंपरिक चिकित्सा को बढ़ावा देने, गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करने और प्रथाओं को विनियमित करने के लिए समर्पित है।
- **NAM:** सरकार आयुष प्रणालियों के प्रचार और विकास के लिए राज्य तथा केंद्र शासित प्रदेश सरकारों के माध्यम से देश में राष्ट्रीय आयुष मिशन (NAM) की केंद्र प्रायोजित योजना को लागू कर रही है।
- आयुष ग्राम की अवधारणा के तहत, व्यवहार परिवर्तन संचार, स्थानीय औषधीय जड़ी-बूटियों की पहचान और उपयोग के लिए ग्राम स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण तथा आयुष स्वास्थ्य सेवाओं के प्रावधान के माध्यम से आयुष आधारित जीवन शैली को बढ़ावा दिया जाता है।
- **आयुर्स्वास्थ्य योजना:** आयुष मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2021-22 से आयुर्वेद स्वास्थ्य योजना की एक केंद्रीय क्षेत्र योजना लागू की है।
- योजना के 02 घटक हैं- आयुष और सार्वजनिक स्वास्थ्य और उत्कृष्टता केंद्र (CoE)।

- आयुष और सार्वजनिक स्वास्थ्य घटक के तहत आयुष दवाओं के वितरण और मुफ्त चिकित्सा शिविर आयोजित करने का प्रावधान है।
- **आयुष में सूचना, शिक्षा और संचार (IEC):** इस योजना के तहत, मंत्रालय राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर आरोग्य मेलों का आयोजन, मल्टीमीडिया अभियान, ऑडियो विजुअल सामग्री सहित प्रचार सामग्री की तैयारी तथा वितरण जैसी प्रचार गतिविधियाँ करता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा:** मंत्रालय आयुष प्रणालियों के प्रचार और प्रसार के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैठकों, सम्मेलनों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए आयुष विशेषज्ञों को विदेशी देशों में भेजता है।
- आयुष औषधि निर्माताओं, उद्यमियों, आयुष संस्थानों आदि को आयुष चिकित्सा प्रणालियों के बारे में जनता के बीच जागरूकता उत्पन्न करने और विदेशी देशों के नियामक प्राधिकरणों के साथ आयुष उत्पादों के पंजीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।

- **बजट आवंटन:**

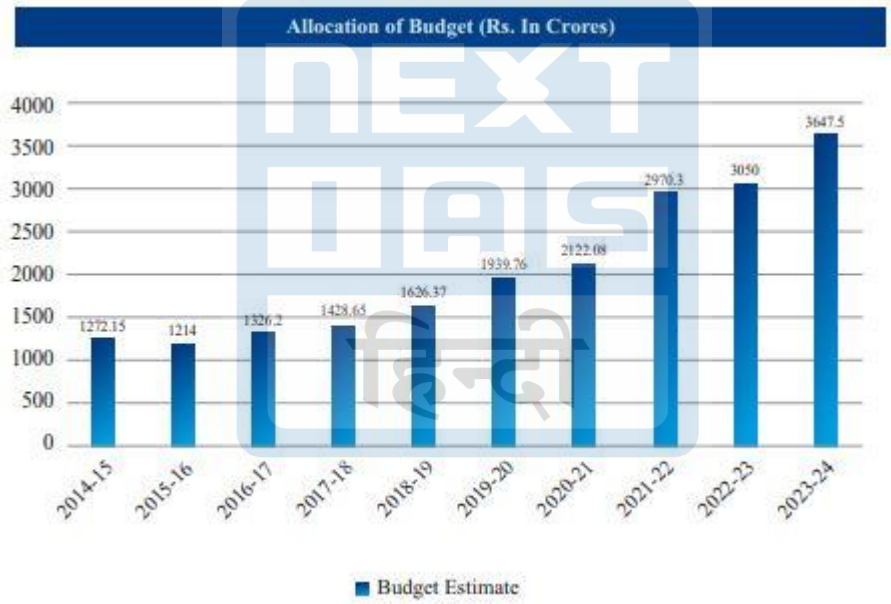

Source: AIR

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने AVGC के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र को मंजूरी दी

सन्दर्भ

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में मुंबई में एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स और एक्सटेंडेड रियलिटी (AVGC-XR) के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (NCoE) की स्थापना को मंजूरी दी।

परिचय

- NCoE की स्थापना की घोषणा 2022-23 के बजट में की गई थी, जिसमें देश में AVGC टास्क फोर्स के गठन का प्रस्ताव रखा गया था।

- भारत के एनीमेशन क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जा रही है, जो फिल्मों, दृश्य प्रभावों (VFX), गेमिंग एनीमेशन और आकर्षक मोबाइल सामग्री की बढ़ती मांग से प्रेरित है।
- FICCI-EY 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत अब विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा एनीमे प्रशंसक आधार रखता है और आने वाले वर्षों में एनीमे में रुचि की विश्वव्यापी वृद्धि में 60% योगदान देने का अनुमान है।

NCoE के बारे में मुख्य बातें

- NCoE को कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत धारा 8 कंपनी के रूप में स्थापित किया जाएगा।
- NCoE AVGC का उद्देश्य भारत में विश्व स्तरीय प्रतिभा पूल बनाना है, जो भारतीय और वैश्विक मनोरंजन उद्योग की जरूरतों को पूरा करेगा।
- इसे अस्थायी रूप से इंडियन इंस्टीट्यूट फॉर इमर्सिव क्रिएटर्स (IIIC) नाम दिया गया है।

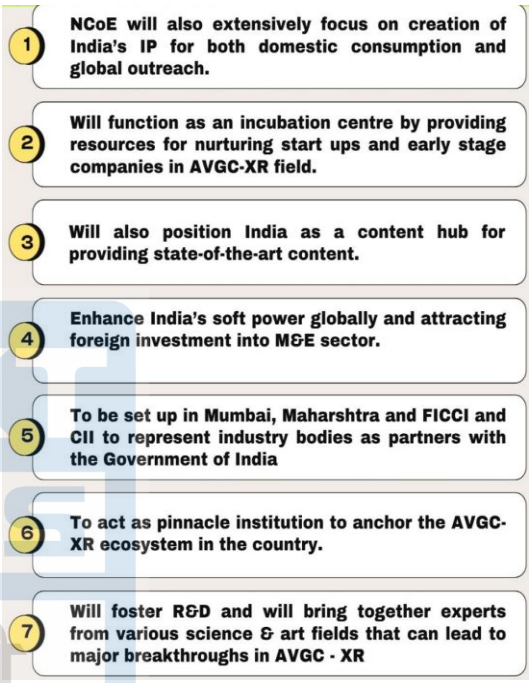

NCoE के लाभ

- **कौशल विकास:** NCoE ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करता है जो व्यक्तियों को एनीमेशन, गेमिंग, विज़ुअल इफ़ेक्ट और XR तकनीकों में उन्नत कौशल से सुसज्जित करते हैं, जिससे अत्यधिक कुशल कार्यबल को बढ़ावा मिलता है।
- **नवाचार केंद्र:** केंद्र AVGC और XR तकनीकों में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देता है, जिससे इन तेज़ी से विकसित हो रहे क्षेत्रों में नए विकास और रचनात्मक समाधान मिलते हैं।
- **उद्योग विकास:** संसाधन, बुनियादी ढाँचा और नेटवर्किंग के अवसर प्रदान करके, NCoE AVGC क्षेत्र को बढ़ावा देने में सहायता करता है, जिससे भारतीय कंपनियाँ वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम होती हैं और रोज़गार सृजन में वृद्धि होती है।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता और सॉफ्ट पावर को बढ़ावा देना:** केंद्र AVGC और XR उद्योगों के लिए वैश्विक केंद्र के रूप में भारत की स्थिति को मज़बूत करता है, जिससे विदेशी निवेश और परियोजनाएँ आकर्षित होती हैं।
- **आर्थिक प्रभाव:** रोज़गार सृजन, निर्यात और घरेलू बाज़ारों से राजस्व में वृद्धि।

Source: PIB

प्रदूषण को लेकर उच्चतम न्यायालय द्वारा दिल्ली वायु गुणवत्ता पैनल को फटकार

सन्दर्भ

- उच्चतम न्यायालय ने उत्तर भारत में पराली जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) की प्रभावशीलता पर प्रश्न उठाया।

पृष्ठभूमि

- हाल ही में दिल्ली में वायु गुणवत्ता 'खराब' श्रेणी में पहुंच गई, जो उत्तर भारत में खराब वायु मौसम के आने का संकेत है।
- उच्चतम न्यायालय ने अपने अधिदेश का पालन न करने के लिए CAQM की आलोचना की और कहा कि आयोग के पास प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को बंद करने जैसे व्यापक अधिकार हैं, लेकिन उसने उनका पूरी तरह से उपयोग नहीं किया है।
    - साथ ही, पराली जलाने से निपटने के लिए कोई विशेष समिति नहीं बनाई गई, जो प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है।

सर्दियों में प्रदूषण का स्तर अधिक होने का कारण

- **मौसमी प्रभाव:** जैसे ही मानसून समाप्त होता है, तापमान उलटा (जहाँ गर्म हवा सतह के पास ठंडी हवा को फँसा लेती है) जैसी मौसमी स्थितियाँ प्रदूषकों को फैलने से रोकती हैं, जिससे खतरनाक प्रदूषण स्तर उत्पन्न होता है।
- **प्रदूषण के स्रोत:** दिल्ली में प्रदूषण विभिन्न स्रोतों से आता है, जैसे:
    - ग्रामीण क्षेत्रों में खाना पकाने के लिए बायोमास जलाना।
    - शहरों में कचरा जलाना और वाहनों से होने वाला उत्सर्जन।
    - औद्योगिक प्रदूषण।
    - हरियाणा और पंजाब जैसे आस-पास के राज्यों में पराली जलाना।
    - दिवाली जैसे त्यौहारों के दौरान पटाखे जलाना।

वर्तमान समाधानों के संबंध में चिंताएं

- **स्मॉग टावर:** ये संरचनाएँ केवल एक छोटे से क्षेत्र में प्रदूषण को कम करती हैं और इसके लिए बिजली की आवश्यकता होती है, जिससे अधिक उत्सर्जन हो सकता है।
- **वाटर गन:** इनका समग्र वायु गुणवत्ता पर सीमित प्रभाव होता है।
- **ऑड-ईवन रोड शेयरिंग:** हालाँकि यह अस्थायी रूप से ट्रैफ़िक को कम करता है, लेकिन दीर्घकालिक प्रभाव न्यूनतम होता है।
- **क्लाउड सीडिंग:** यह विधि कृत्रिम वर्षा बनाने के लिए सिल्वर आयोडाइड जैसे रसायनों का उपयोग करती है, लेकिन इससे पर्यावरणीय जोखिम हो सकते हैं।
- जल वाष्प जो स्वाभाविक रूप से कहीं और गिरती है, उसमें परिवर्तित किया जाता है, जिससे अन्य क्षेत्रों में सूखा पड़ सकता है।
- इसके अतिरिक्त, उपयोग किए जाने वाले रसायन मिट्टी और पानी में जमा हो सकते हैं, जो संभावित रूप से पारिस्थितिकी तंत्र को हानि पहुँचा सकते हैं।

आगे की राह

- **बेहतर समन्वय:** परिवहन, उद्योग, कृषि और शहरी नियोजन के लिए जिम्मेदार एजेंसियों को एक साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।
    - पराली जलाने की समस्या के लिए राज्य की सीमाओं के पार किसानों, नीति निर्माताओं और नियामकों के बीच सहयोग की आवश्यकता है।
- **क्षमता निर्माण:** नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं, नियामकों और उद्योगों को मिलकर कार्य करना चाहिए और उन समाधानों का गंभीरता से मूल्यांकन करना चाहिए जो वास्तव में सार्वजनिक हित में हैं।

- **व्यापक वायु गुणवत्ता निगरानी:** जबकि दिल्ली जैसे शहरों पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है, ग्रामीण और औद्योगिक क्षेत्रों में प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या है। वायु गुणवत्ता निगरानी में सभी क्षेत्रों को शामिल किया जाना चाहिए।
- **मूल कारण को संबोधित करें:** क्लाउड सीडिंग और स्मॉग टावर जैसे समाधान सतही कार्रवाई के रूप में काम करते हैं। वास्तविक समाधानों को अस्थायी राहत देने के बजाय प्रदूषण के मूल कारणों को संबोधित करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

- समस्या का दायरा दीर्घकालिक समाधान की मांग करता है, लेकिन प्रतिक्रिया प्रायः अल्पकालिक, प्रकाशिकी-संचालित उपायों की विशेषता रही है।
- भारत को वैज्ञानिक सोच पर आधारित और निरंतर, सहयोगी कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध बहु-दशकीय, बहु-क्षेत्रीय प्रयास की आवश्यकता है।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग(CAQM)

- CAQM का गठन राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग अधिनियम, 2021 के तहत किया गया था।
- **उद्देश्य:** अधिनियम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) और आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं के बेहतर समन्वय, अनुसंधान, पहचान और समाधान के लिए एक आयोग के गठन का प्रावधान करता है।
- **आयोग की शक्तियों में शामिल हैं;**
  - वायु गुणवत्ता को प्रभावित करने वाली गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाना,
  - वायु प्रदूषण को रोकने और नियंत्रित करने के लिए कोड तथा दिशा-निर्देश तैयार करना,
  - निरीक्षण या विनियमन सहित मामलों पर निर्देश जारी करना जो संबंधित व्यक्ति या प्राधिकरण के लिए बाध्यकारी होगा।
  - आयोग केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित पराली जलाकर प्रदूषण फैलाने वाले किसानों से पर्यावरण क्षतिपूर्ति आरोपित कर सकता है और एकत्रित कर सकता है।
  - आयोग ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) के तहत NCR में वायु प्रदूषण से निपटने के लिए आदेश जारी करता है।
- किसी भी विवाद की स्थिति में, आयोग के आदेश या निर्देश संबंधित राज्य सरकारों, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB), राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और राज्य स्तरीय वैधानिक निकायों के आदेशों पर प्रभावी होंगे।

Source: IE

निष्क्रिय इच्छामृत्यु पर ड्राफ्ट दिशानिर्देश जारी

सन्दर्भ

- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने असाध्य रूप से बीमार मरीजों से जीवन रक्षक प्रणाली हटाने के लिए ड्राफ्ट दिशानिर्देश जारी किए हैं।

इच्छामृत्यु

- इच्छामृत्यु किसी व्यक्ति के दर्द या पीड़ा को समाप्त करने के लिए इच्छानुरूप उसके जीवन को समाप्त करने का कार्य है।
- नैतिकतावादी सक्रिय और निष्क्रिय इच्छामृत्यु के बीच अंतर करते हैं।
    - निष्क्रिय इच्छामृत्यु में किसी व्यक्ति की प्राकृतिक मृत्यु की अनुमति देने के उद्देश्य से जीवन समर्थन जैसे चिकित्सा हस्तक्षेप को रोकने या वापस लेने का इच्छानुरूप निर्णय शामिल है।
    - सक्रिय इच्छामृत्यु एक गंभीर रूप से बीमार रोगी को स्वैच्छिक अनुरोध पर, रोगी की भलाई के उद्देश्य से डॉक्टर के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप द्वारा मारने का इच्छानुरूप किया गया कार्य है। यह भारत में अवैध है।

ड्राफ्ट दिशानिर्देश

- **टर्मिनल बीमारी की परिभाषा:** इसे एक अपरिवर्तनीय या लाइलाज स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है, जिससे निकट भविष्य में मृत्यु अपरिहार्य है।
    - गंभीर विनाशकारी दर्दनाक मस्तिष्क की चोट जो 72 घंटे या उससे अधिक समय के बाद भी ठीक नहीं होती है, उसे भी इसमें शामिल किया गया है।
- चार शर्तों के तहत जीवन समर्थन वापस लिया जा सकता है:
    - व्यक्ति को मानव अंग प्रत्यारोपण (THOA) अधिनियम के अनुसार ब्रेन स्टेम मृत घोषित किया जाना चाहिए।
    - चिकित्सा पूर्वानुमान में यह संकेत होना चाहिए कि रोगी की स्थिति गंभीर है और आक्रामक चिकित्सीय हस्तक्षेप से लाभ होने की संभावना नहीं है।
    - रोगी या सरोगेट को जीवन समर्थन जारी रखने के लिए पूर्वानुमान जागरूकता के बाद सूचित प्रतिषेध का दस्तावेजीकरण करना चाहिए।
    - उच्चतम न्यायलय द्वारा निर्धारित प्रक्रियाओं का अनुपालन होना चाहिए।
- **कानूनी सिद्धांत:** उच्चतम न्यायलय द्वारा उल्लिखित कानूनी सिद्धांत बताते हैं कि स्वास्थ्य देखभाल संबंधी निर्णय लेने में सक्षम एक वयस्क रोगी LST से मना कर सकता है, भले ही इससे मृत्यु हो जाए।
    - स्वायत्तता, गोपनीयता और गरिमा के मौलिक अधिकार के आधार पर, उन व्यक्तियों से कुछ शर्तों के तहत LST को वैध रूप से रोका या वापस लिया जा सकता है, जिनके पास अब निर्णय लेने की क्षमता नहीं है।
    - अग्रिम चिकित्सा निर्देश (AMD) जो निर्दिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करता है, एक कानूनी रूप से वैध दस्तावेज है।
- **तंत्र:** कम से कम 3 चिकित्सकों के समूह के बीच सामान्य सहमति से प्रस्ताव बनाए जाने चाहिए, जो प्राथमिक चिकित्सा बोर्ड (PMB) बनाते हैं।
    - PMB को सरोगेट को पूरी तरह से सूचित करने के लिए बीमारी, उपलब्ध चिकित्सा उपचार, उपचार के वैकल्पिक रूपों और उपचारित तथा अनुपचारित रहने के परिणामों के बारे में बताना चाहिए।
    - जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी (CMO) द्वारा नियुक्त एक व्यक्ति के साथ 3 चिकित्सकों का एक माध्यमिक चिकित्सा बोर्ड (SMB) PMB द्वारा निर्णय को मान्य करेगा।
- **नैदानिक नैतिकता समिति:** ऑडिट, निरीक्षण और संघर्ष समाधान के लिए अस्पतालों द्वारा गठित।

विधिक प्रवृति

- उच्चतम न्यायालय ने 2018 में निष्क्रिय इच्छामृत्यु को वैध बनाया था, जो व्यक्ति के पास "लिविंग विल" होने पर निर्भर करता है।
- उच्चतम न्यायालय ने माना कि 'सम्मान के साथ मरने का अधिकार' भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार का एक भाग है।
- लिविंग विल एक लिखित दस्तावेज है जो यह निर्दिष्ट करता है कि यदि व्यक्ति भविष्य में अपने स्वयं के चिकित्सा निर्णय लेने में असमर्थ है तो उसे क्या कार्रवाई करनी चाहिए।
- गोवा पहला राज्य है जिसने कुछ सीमा तक उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी निर्देशों के कार्यान्वयन को औपचारिक रूप दिया है।

Source: IE

संक्षिप्त समाचार

कच्छ का रण

सन्दर्भ

- गुजरात में कच्छ का छोटा रण मानवीय गतिविधियों और पर्यावरणीय मुद्दों से खतरे का सामना कर रहा है।

कच्छ का रण

- कच्छ का रण भारत-पाकिस्तान सीमा पर विस्तारित एक विशाल नमक दलदली क्षेत्र है, जो मुख्य रूप से भारत के गुजरात में स्थित है, जिसका एक छोटा हिस्सा पाकिस्तान के सिंध प्रांत में फैला हुआ है।
- इसका निर्माण लगभग 150-200 मिलियन वर्ष पहले शुरू हुआ था। यह दो भागों में विभाजित है: उत्तर में कच्छ का महान रण और दक्षिण-पूर्व में कच्छ का छोटा रण।

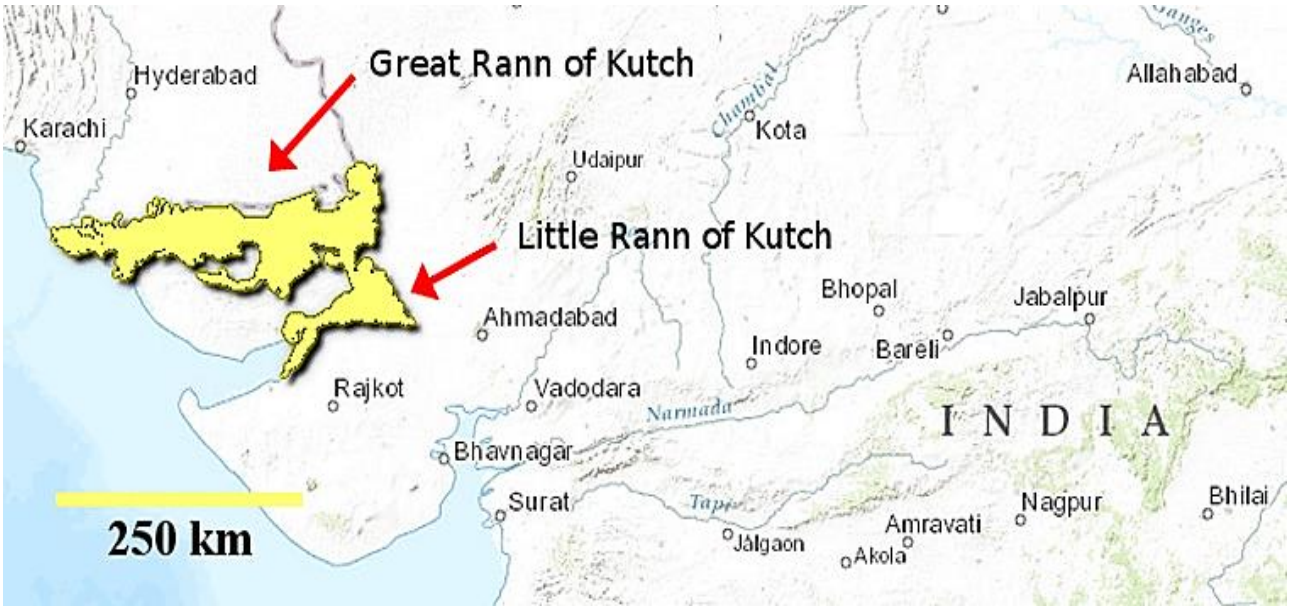

- कच्छ का रण एक अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र है, जो उत्तर में थार रेगिस्तान और दक्षिण में अरब सागर से घिरा है।
- मूल रूप से, अरब सागर का पानी इस क्षेत्र में प्रवेश करता था। बाद में, भूगर्भीय परिवर्तनों के कारण एक भूभाग का निर्माण हुआ जिसने कच्छ बेसिन को समुद्र से अलग कर दिया।
- मानसून के दौरान, छोटा रण एक उथली आर्द्रभूमि में परिवर्तित हो जाता है। लगभग 75 ऊंचे भूभाग द्वीपों में बदल जाते हैं, जिन्हें स्थानीय अगरिया और मालधारी समुदाय बेट(bet) कहते हैं।
- ऐतिहासिक रूप से, यह क्षेत्र नवपाषाण काल से बसा हुआ है, जिसमें सिंधु घाटी सभ्यता और मौर्य और गुप्त राजवंशों जैसे विभिन्न भारतीय साम्राज्यों का प्रभाव है।

मानवीय गतिविधि

- **नमक उत्पादन:** यह क्षेत्र नमक उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है, जो भारत के कुल नमक उत्पादन का 30% प्रदान करता है।
- **खतरा:** बड़े पैमाने पर मवेशियों के चरने से पारिस्थितिकी तंत्र का नाजुक संतुलन खराब होता है।
    - इसके अतिरिक्त, सिंचाई नहरें जो छोटे रण के दक्षिणी किनारे तक पानी लाती हैं, मिट्टी में लवणता बढ़ाती हैं।

Source: TH

स्वच्छ भारत मिशन शहरी 2.0

सन्दर्भ

- पांच वर्षीय स्वच्छ भारत मिशन शहरी 2.0 के तीन वर्षों में, बड़े शहरों ने अपने पुराने अपशिष्ट भराव क्षेत्र(landfill) स्थलों में से आधे से भी कम को साफ किया है, तथा केवल 38% डंप किए गए कचरे का ही निपटान किया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन (SBM-U) 2.0

- इसे 2021 में पांच वर्ष की अवधि के लिए लॉन्च किया गया था, जिसका उद्देश्य
    - 100% स्रोत पृथक्करण,
    - डोर-टू-डोर संग्रह और
    - वैज्ञानिक अपशिष्ट भराव क्षेत्र(landfill) में सुरक्षित निपटान सहित कचरे के सभी अंशों का वैज्ञानिक प्रबंधन के माध्यम से सभी शहरों के लिए कचरा मुक्त स्थिति प्राप्त करना है।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई अनुपचारित मल कीचड़ या उपयोग किया गया पानी पर्यावरण में न बहाया जाए, एक लाख से कम जनसँख्या वाले शहरों के लिए प्रयुक्त जल प्रबंधन (UWM) का एक नया घटक शामिल किया गया है।
- इसका उद्देश्य 2025-2026 तक सभी पुराने डंपसाइटों का सुधार करना और उन्हें हरित क्षेत्रों में परिवर्तित करना है।

सरकारी पहल

- नए स्टार-रेटिंग प्रोटोकॉल के अंतर्गत कचरा मुक्त शहरों के लिए 6-स्टार रेटिंग।
- शहरों को विभिन्न स्वच्छता और सफाई मापदंडों पर रैंकिंग देने के लिए शहरी स्वच्छ सर्वेक्षण (स्वच्छता सर्वेक्षण) का एकीकरण।
- 3R पर अधिक ध्यान: कम करें, पुनः उपयोग करें और पुनर्चक्रण करें।

Source: IE

मारबर्ग वायरल रोग

समाचार में

- रवांडा में मारबर्ग वायरल रोग के प्रकोप के कारण कई लोग मारे गए हैं।

मारबर्ग वायरल रोग के बारे में

- यह इबोला के समान एक गंभीर, अत्यधिक संक्रामक रक्तस्रावी बुखार है जो फिलोवायरस परिवार से संबंधित है।
- मारबर्ग वायरस का प्राकृतिक मेजबान अफ्रीकी फ्रूट चमगादड़(African fruit bat) है, जो रोगज़नक़ का वाहक होता है। यह वायरस चमगादड़ों से प्राइमेट्स में फैल सकता है, जिसमें मनुष्य भी शामिल हैं।
- इस वायरस की प्रथम पहचान 1967 में जर्मनी के मारबर्ग में हुई थी, जब संक्रमित ग्रीन बंदरों(green monkeys) से श्रमिकों में इस वायरस का प्रसार हुआ था।
- वर्तमान में कोई स्वीकृत टीका या एंटीवायरल उपचार उपलब्ध नहीं है।

Source: ET

IBSA

सन्दर्भ

- हाल ही में तीन देशों के समूह IBSA (भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका) के ढांचे के तहत सभी संयुक्त राष्ट्र सूचीबद्ध आतंकवादियों और आतंकी संस्थाओं के विरुद्ध कार्रवाई पर एक बैठक आयोजित की गई थी।

IBSA

- IBSA एक अद्वितीय मंच है जो भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका को एक साथ लाता है। इसकी स्थापना 2003 में ब्रासीलिया घोषणा के बाद की गई थी।
- इसकी अध्यक्षता भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका की बारी-बारी से होती है।
- समूह 2023 में 20 वर्ष पूरे करेगा।
- **उद्देश्य:** एक नए अंतर्राष्ट्रीय ढांचे के निर्माण में योगदान देना;
  - वैश्विक मुद्दों पर अपनी आवाज एक साथ लाना;
  - विभिन्न क्षेत्रों में अपने संबंधों को घनिष्ठ करना।
- IBSA कोष की स्थापना 2004 में हुई थी और यह 2006 में चालू हुआ। यह स्थानीय सरकारों, राष्ट्रीय संस्थानों और कार्यान्वयन भागीदारों के साथ साझेदारी के माध्यम से मांग-संचालित आधार पर परियोजनाओं का समर्थन करता है।

Source: ET

PM सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना

समाचार में

- **PM सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना** में 1.28 करोड़ से अधिक पंजीकरण और 14.84 लाख आवेदन हुए हैं, जो महत्वपूर्ण रुचि दर्शाता है।

PM सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना

- इसे 15 फरवरी, 2024 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लॉन्च किया गया था, यह एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य घरों को मुफ्त बिजली प्रदान करके भारत के ऊर्जा परिदृश्य को बदलना है।
- इस पहल के तहत छतों पर सौर पैनल लगाने की लागत पर 40% तक की पर्याप्त सब्सिडी दी जाती है, जिससे घरों को सौर ऊर्जा अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- इस योजना का उद्देश्य देश भर के 1 करोड़ घरों को लाभ पहुँचाना है।
- इससे सरकार को बिजली की लागत में वार्षिक 75,000 करोड़ रुपये की बचत होने का अनुमान है।

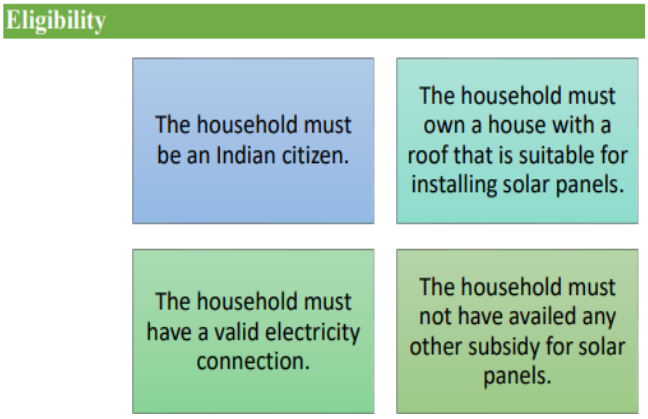

- यह पहल सतत ऊर्जा को बढ़ावा देने और सभी नागरिकों के लिए ऊर्जा की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर बल देती है।

Source: TH

सरकार ने गैर-बासमती सफेद चावल के निर्यात पर प्रतिबंध हटाया

सन्दर्भ

- केंद्र सरकार ने गैर-बासमती सफेद चावल के निर्यात पर प्रतिबंध हटा लिया है।
  - निर्यात प्रतिबंध पिछले वर्ष चावल उत्पादन में मामूली गिरावट और अनियमित मानसून के खतरे के बीच लगाया गया था।

महत्वपूर्ण तथ्य

- चीन विश्व में चावल का सबसे बड़ा उत्पादक है, उसके बाद भारत, बांग्लादेश और इंडोनेशिया का स्थान आता है।
  - भारत, चीन के साथ मिलकर विश्व के चावल उत्पादन का आधे से अधिक भाग का उत्पादन करता है।
  - हालांकि, चीन चावल का सबसे बड़ा उपभोक्ता भी है, जिससे निर्यात के लिए बहुत कम चावल बचता है।
- भारत विश्व का सबसे बड़ा चावल निर्यातक है, जो 2023 के दौरान विश्व के कुल चावल निर्यात का 33 प्रतिशत हिस्सा होगा।
- दो पूर्वी एशियाई देश- थाईलैंड और वियतनाम- वैश्विक चावल बाज़ार में भारत के दो मुख्य प्रतिस्पर्धी हैं।
  - 2023 में, इन दोनों देशों का संयुक्त चावल निर्यात भारतीय निर्यात के लगभग बराबर था।

Source: IE

डार्क मैटर

सन्दर्भ

- अमेरिका के साउथ डकोटा में 1.5 किमी. भूमिगत स्थित LUX-ZEPLIN (LZ) प्रयोग के शोधकर्ताओं ने डार्क मैटर की खोज में एक महत्वपूर्ण प्रगति की घोषणा की।

परिचय

- हालांकि वे डार्क मैटर के लिए जिम्मेदार कण की पहचान नहीं कर पाए, लेकिन वे कुछ संभावनाओं को समाप्त करने में सफल रहे, जिससे XENON-nT (इटली) और PandaX-4T (चीन) जैसे वैश्विक प्रयोगों से दशकों से मिल रहे समान शून्य परिणाम जारी रहे।

डार्क मैटर

- डार्क मैटर पदार्थ का एक काल्पनिक रूप है जो ब्रह्मांड की द्रव्यमान-ऊर्जा सामग्री का लगभग 27% बनाता है लेकिन अदृश्य रहता है और प्रकाश का उत्सर्जन, अवशोषण या परावर्तन नहीं करता है।
- इसकी अदृश्यता के बावजूद, इसके अस्तित्व का अनुमान सितारों और आकाशगंगाओं जैसे दृश्यमान पदार्थों पर इसके गुरुत्वाकर्षण प्रभावों के माध्यम से लगाया जाता है।

डार्क मैटर का महत्व

- डार्क मैटर आकाशगंगाओं, आकाशगंगाओं के समूहों और बड़े पैमाने पर ब्रह्मांडीय जाल में पदार्थ के वितरण को समझाने में सहायता करता है।
- यह आकाशगंगाओं को एक साथ रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि देखे गए गुरुत्वाकर्षण प्रभावों को केवल दृश्यमान पदार्थ द्वारा समझाया नहीं जा सकता है।
- ब्रह्मांड के निर्माण, संरचना और भविष्य की पूरी समझ के लिए डार्क मैटर का अध्ययन करना आवश्यक है।

डार्क एनर्जी

- डार्क एनर्जी को ब्रह्मांड के तेजी से विस्तार के लिए उत्तरदायी माना जाता है, जो इसकी कुल ऊर्जा सामग्री का 68% हिस्सा बनाती है।
- यह एक रहस्यमयी शक्ति है जो नकारात्मक दबाव डालती है, आकाशगंगाओं और पदार्थ को एक दूसरे से दूर धकेलती है।
- यह घटना बताती है कि ब्रह्मांड बढ़ती दर से क्यों फैल रहा है, जैसा कि दूर के सुपरनोवा और आकाशगंगा समूहों में देखा गया है।

Source: TH

थर्मोबेरिक हथियार

सन्दर्भ

- रूस द्वारा यूक्रेन में ODAB-1500 थर्मोबैरिक हथियारों के प्रयोग ने उनके विनाशकारी प्रभावों के कारण काफी ध्यान आकर्षित किया है।

थर्मोबैरिक हथियार क्या हैं?

- थर्मोबैरिक हथियार, जिन्हें "वैक्यूम बम" या "बढ़े हुए विस्फोट हथियार" के रूप में भी जाना जाता है, अपनी विस्फोटक शक्ति को बढ़ाने के लिए वायुमंडल की ऑक्सीजन पर निर्भर करते हैं।
- पारंपरिक विस्फोटकों के विपरीत, जिनमें ईंधन और ऑक्सीडाइज़र दोनों होते हैं, थर्मोबैरिक बम ईंधन का समूह छोड़ते हैं, जो प्रज्वलित होने पर उच्च तापमान वाले विस्फोट का कारण बनता है।
- यह विस्फोट अत्यधिक दबाव की एक विस्फोट तरंग उत्पन्न करता है, जिसके बाद आस-पास की ऑक्सीजन के समाप्त होने के कारण एक तेज़ वैक्यूम प्रभाव होता है।
- 2001 में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने टोरा बोरा पहाड़ों की गुफाओं में छिपे अल-कायदा बलों को निशाना बनाने के लिए इन हथियारों को तैनात किया था।

प्रभाव

- अत्यधिक दबाव और वैक्यूम का संयोजन इन हथियारों को बंकरों, इमारतों और सुरंगों जैसे बंद स्थानों में विनाशकारी बनाता है।
- थर्मोबैरिक बमों द्वारा उत्पादित शॉकवेव संरचनाओं को नष्ट कर सकती है, जबकि विस्फोट के दबाव के अंतर से मानव शरीर को विनाशकारी क्षति होती है, जिसमें अंगों और फेफड़ों का फटना भी शामिल है।
- उनके उपयोग पर विशेष रूप से प्रतिबंध लगाने वाले कोई अंतर्राष्ट्रीय कानून नहीं हैं, लेकिन अगर कोई देश निर्मित क्षेत्रों, स्कूलों या अस्पतालों में नागरिक जनसँख्या को लक्षित करने के लिए उनका उपयोग करता है, तो उसे 1899 और 1907 के हेग सम्मेलनों के तहत युद्ध अपराध का दोषी ठहराया जा सकता है।

Source: FE

परिवेश 2.0 पोर्टल

समाचार में

- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) को परिवेश 2.0 पोर्टल पर विदेशी प्रजातियों को पंजीकृत करने के लिए केवल 32 आवेदन प्राप्त हुए।

परिवेश के बारे में

- PARIVESH का मतलब है (प्रो-एक्टिव रिस्पॉन्सिव फैसिलिटेशन बाय इंटरएक्टिव एंड वर्चुअस एनवायरनमेंटल सिंगलविंडो हब)।
- परिवेश को मूल रूप से 2018 में विभिन्न पर्यावरण, वन, वन्यजीव और तटीय विनियमन क्षेत्र मंजूरी के लिए एकल खिड़की प्रदान करने के लिए लॉन्च किया गया था।
- परिवेश 2.0 एक उन्नत संस्करण है जिसे अनुमोदन प्रक्रिया में दक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही में सुधार करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह पर्यावरण मंजूरी, वन मंजूरी, वन्यजीव मंजूरी और तटीय विनियमन क्षेत्र मंजूरी के लिए एक एकल मंच प्रदान करता है।
- परिवेश 2.0 एक मोबाइल ऐप प्रस्तुत करता है जो परियोजना समर्थकों को उनके मंजूरी आवेदनों और अनुपालन प्रस्तुतियों को ट्रैक करने की अनुमति देता है।

परिवेश 2.0 का महत्व

- व्यापार करने में सुलभता को बढ़ाता है
- बेहतर पर्यावरणीय प्रशासन सुनिश्चित करता है
- मंजूरी में देरी को कम करता है

Source: IE

केरल की RRR चैंपियन' पहल

समाचार में

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से 'अपशिष्ट से धन' मंत्र और इसकी सफलता की प्रशंसा की तथा 'कम करें, पुनः उपयोग करें, पुनः चक्रित करें' के महत्व पर प्रकाश डाला।

RRR चैंपियन' पहल

- प्रधानमंत्री ने केरल के कोझिकोड के 74 वर्षीय श्री सुब्रमण्यम का उल्लेख किया, जिन्होंने 23,000 से अधिक कुर्सियों की मरम्मत की है और उन्हें पुनः उपयोग योग्य बनाया है।
    - श्री सुब्रमण्यम को उनके अनूठे प्रयासों के लिए 'रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकिल' (RRR) चैंपियन के रूप में जाना जाता है।
    - उनके कार्य को कोझिकोड सिविल स्टेशन, RRR, LICऔर BSNL जैसे विभिन्न कार्यालयों में देखा जा सकता है।
- 3R- रिड्यूस, रीयूज और रीसाइकिल के सिद्धांत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहे हैं।
- जैव विविधता का संरक्षण, सतत जीवन तथा प्रकृति के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व भारतीय जीवन शैली का मार्गदर्शक दर्शन रहा है और हमेशा प्राचीन शास्त्रों की शिक्षाओं का हिस्सा रहा है।

Source: IE

■■■■